



SHRI NARAYAN J. JOSHI 'KARAYAL'

Shri Narayan J. Joshi, fondly known as 'Karayal' (means India's national bird Peacock), is one of the greatest proponents of the Kachchhi language and literature. He understood an imperative need to look into the possibilities of collaborative framework that sustains the language, especially the indigenous ones like Kachchhi language.

2. Born on 31st January, 1943 at Vigodi-Kachchh, Shri Joshi received his senior P.T.C. degree in 1961. He worked as a teacher and principal of Primary school in various villages of Kachchh (Gujarat) for 40 years, till 2000. He dreamed to develop his mother tounge, Kachchhi language. With that dream, he framed and founded 'Kachchhi Shahitya Kala Sangh' in 1999 and served for the development of 'Kachchhi' language. His major contribution for the development of this language is his book, 'Kachchhi Pathavali' in two parts, which has been standardised by GCERT to teach and learn Kachchhi.

3. Shri Joshi established a system of taking examinations namely 'Jan' & 'Sujan' and to learnt Kachchhi with help of VRTI and 'Kachchhi Pathavali' used as a textbook for 20 years. He has to his credit the translation of Gandhian Literature in Kachchhi.

4. Shri Joshi has also received the praise for his valuable contribution towards society as a social reformer by inspiring and provoking nationalistic spirit in young minds. Not only he has gained fame by working with units such as SSB and GRD but also was admired by the District Collector of Kachchh for motivating youngsters for blood donation during Indo-Pak war in 1971. He has also been given the credit for the discovery of Gadhvadi Archeological site which was discovered in the year 1998 and he generously bestowed all the valuable fossils and other emblems to Kachchh Museum.

5. Shri Joshi was conferred 'Gaurav Puraskar' and 'Life Time Achievement Award' in 2009 by Kachchhi Sahitya Academy of Government of Gujarat. Shri Joshi is the recipient of numerous other awards and honours including 'The Best Teacher's Award' by the Governor of Gujarat in 1989 and 'National Award for Best Teachers' by the President of India in 1991 etc.





श्री नारायण जे. जोशी 'कारायल'

श्री नारायण जे. जोशी, जिन्हें प्यार से 'कारायल' (भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर) कहा जाता है, कच्छी भाषा और साहित्य के सबसे बड़े संरक्षकों में से एक हैं। उन्होंने ऐसी सहयोगी व्यवस्था की संभावनाओं पर विचार करने की जरूरत को समझा, जिससे कच्छी जैसी देशी भाषा को जीवित रखा जा सके।

2. 31 जनवरी, 1943 को विगोड़ी–कच्छ में जन्मे, श्री जोशी ने 1961 में सीनियर पी.टी.सी. डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 40 वर्ष यानी 2000 तक, कच्छ (गुजरात) के विभिन्न गांवों में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक और प्रधानाचार्य के रूप में कार्य किया। उन्होंने अपनी मातृभाषा कच्छी को विकसित करने का सपना संजोया। इस सपने के साथ, उन्होंने 1999 में 'कच्छी साहित्य कला संघ' का निर्माण किया और कच्छी भाषा के विकास के लिए काम किया। कच्छी भाषा के विकास में उनका प्रमुख योगदान दो खंडों में उनकी पुस्तक, 'कच्छी पदावली' है, जिसे जीसीईआरटी द्वारा कच्छी को पढ़ाने और सीखने के लिए मानकीकृत किया गया है।

3. श्री जोशी ने 'जन और सुजान' नाम से परीक्षा प्रणाली स्थापित की और वी आर टी आई एवं कच्छी पदावली की मदद से 'कच्छी' भाषा सीखने में योगदान दिया। उन्हें गांधीवादी साहित्य का कच्छी भाषा में अनुवाद करने का श्रेय दिया जाता है।

4. श्री जोशी को युवाओं के मन में राष्ट्रवादी भावना जगाकर एक समाज सुधारक के रूप में समाज के प्रति उनके बहुमूल्य योगदान के लिए ख्याति प्राप्त हुई है। उन्होंने न केवल एसएसबी और जीआरडी जैसी यूनिटों के साथ काम करके प्रसिद्धि प्राप्त की है, अपितु कच्छ के जिला कलेक्टर द्वारा 1971 में भारत–पाक युद्ध के दौरान रक्तदान के लिए युवाओं को प्रेरित करने के लिए उनकी सराहना की गई। उन्हें वर्ष 1998 में गढ़वाड़ी पुरातत्व स्थल की खोज का भी श्रेय दिया गया है और उन्होंने सभी मूल्यवान जीवाश्मों और अन्य प्रतीक चिन्हों को कच्छ संग्रहालय को उदारतापूर्वक दान में दे दिया।

5. श्री जोशी को गुजरात सरकार की कच्छी साहित्य अकादमी द्वारा 2009 में 'गौरव पुरस्कार' और 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड' से सम्मानित किया गया। उनको 1989 में गुजरात के राज्यपाल द्वारा 'सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार' और 1991 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा' सर्वश्रेष्ठ शिक्षक का राष्ट्रीय पुरस्कार' सहित कई अन्य पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं।